*** उपसंहार ***

श्री. विष्णु प्रभाकर हिंदी के प्रख्यात लेखक एवं नाटककार हैं । उनका जन्म 21 जून, 1912 को हुआ है । 1926 ई. से उन्होंने लिखना आरंभ किया । उस समय वे 8 वी कक्षा में पढते थे । उनका व्यवस्थित लेखन 1934 के बाद ही शुरु हुआ । 1945 ई. में "आदि और अंत" यह पहला कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ । 1947 ई. के बाद वे निरंतर लिखते रहें । वह सिलसिला अब तक जारी हैं । विष्णुजी को बचपन में साहित्य में रुचि रही हैं । आरंभ में वे कथा–साहित्य और फिर नाटककार की हैसियत से हिंदी साहित्य में आये । साहित्य की सेवा के लिए उन्होंने सरकारी नौकरी का इस्तीफा दिया और अपने को पूर्णतः साहित्य के क्षेत्र में झोंक दिया ।

विष्णुजी का व्यक्तित्व एक उन्मुक्त साहित्यकार का है । उनके व्यक्तित्व में जो कुछ है वह अत्यंत सहज और सरल है । उनमें प्रदर्शन की प्रवृत्ति नहीं हैं । वे परंपरावादी और आधुनिक विचारवाले हैं । परंपरावादी इस अर्थ में कि उन्हें देश के गौरवमय अतीत के प्रति आस्था है, तो आधुनिक इस अर्थ में कि नये जीवन की वैज्ञानिक भमिकाओं के प्रति सहज आत्मीयता है । उनके साहित्यिक व्यक्तित्व में आत्मसम्मान और ईमानदारी हैं । उन्होंने आधुनिक जीवन की विषम परिस्थितियों में स्वतंत्र लेखक का व्रत लिया और आत्मसम्मान तथा निष्ठा से उसका निर्वाह किया ।

विष्णुजी की जीवन तथा साहित्य के प्रति स्वतंत्र धारणाएँ है । उन्हें रुढियों से घृणा है । लेकिन कुछ परंपराओं से प्यार भी है, धार्मिक संकीर्णताएँ उन्होंने होश सँभालते ही छोड दी थी । फिर भी वे आस्थावादी लेखक रहे हैं । उनका जीवन निरंतर संघर्ष के बीच से गुजरा है । जीवन का यही संघर्ष उनकी स्थिति है, शक्ति है । वास्तव में वे शुध्द मानवतावादी लेखक है । वे मानव–मन की गहरी पकड रखनेवाले प्रबुध्द संवेदनशील एवं सात्विक वृत्ति के साहित्यकार है । उनके संपूर्ण साहित्य में मानवता का स्वर मुखरित हुआ है ।

विष्णुजी का व्यक्तित्व मूल रुप में एकांकी और नाटक लिखने का है, किंतु उन्होंने समय की माँग और आवश्यकता का अनुभव कर कहानी, जीवनी, यात्रा–विवरण, संस्मरण, बालसाहित्य के साथ-साथ अनुवाद और संपादन का कार्य भी किया है । सन 1981 तक की उनकी रचनाओं की कुल संख्या 102 है । इसके बाद भी वे निरंतर साहित्य लिख रहें हैं । सच्ची लगन और दृढविश्वास से वे मानव की शक्ति और विश्वास को लेकर आगे बढते रहे हैं ।

विष्णुजी आरंभ में कथा साहित्य और फिर नाटककार की हैसियत से हिंदी साहित्य में आये । कथा–साहित्य में 250 से अधिक कहानियाँ और 5 उपन्यास लिखे है । उनके कथा–साहित्य पर आर्य समाज के सुधारवाद का और गांधीजी के अहिंसा और प्रेम का प्रभाव परिलक्षित होता है । यह आदर्शवाद और गांधीजी का प्रभाव उन पर रहा है फिर भी वे अपने कथा–साहित्य में न आदर्श से बंधे हैं, न सिध्दांतों से । उन्होंने भोगे हुए यथार्थ की पृष्ठभूमि में उसी उदात्त मानवता की खोज की हैं । उन्होंने कथा–साहित्य में सैकडों विषयों पर लिखा है जैसे – समाज की स्थिति,

अंध-विश्वासों का आतंक, रुढियों का मिथ्या मोह, दूषित राजनीति, भ्रष्टाचार, नारी विद्रोह, हिंदू-मुस्लिम एकता, राष्ट्रीयता, स्वदेश-प्रेम, त्याग, बलिदान, मन का द्वंद्व, संघर्ष, जीवन-स्वप्न, मोह-भंग आदि ।

विष्णु प्रभाकर के "तट के बंधन" नामकसामाजिक उपन्यास में नारी जीवन की त्रासदी को दर्शाया हैं । उसमें प्रमुखतः नारी की विविध समस्याओं का चित्रण कर नारी को स्वयं अपने पथ का निर्माण करने की प्रेरणा दी है । इसके साथ-साथ देश की महत्वपूर्ण समस्याओं की ओर भी संकेत किये हैं । उन्होंने नारी के संबंध में कहा है कि नारी जब तक साहस करके अपने पथ का निर्माण नहीं करेगी तब तक वह समाज की कुरीतियों, कुप्रथाओं की शिकार रहेगी । अतः उसने साहस कर अपने पथ का निर्माण करना चाहिए । विष्णुजी का "तट के बंधन" उपन्यास वर्तमान स्थिति को लेकर लिँखा है । प्रस्तुत उपन्यास का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने उपन्यास के कथावस्तु, चरित्र चित्रण या पात्र तथा अन्य तत्त्वों का उचित निर्वाह करने में अच्छी सफलता हासिल की हैं ।

<u>कथावस्तु</u> :

विष्णुजी का "तट के बंधन" एक सामाजिक उपन्यास है । प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु साधारण है किंतु महत्वपूर्ण है । उसमें सामान्यतः आकर्षक घटनाओं का कुशलता से चित्रण किया है । कथावस्तु का आधार मानव जीवन की समस्याओं का उद्घाटन करना है ।

इसमें प्रमुख रुप से नारी जीवन की त्रासदी को स्पष्ट करने का प्रयास किया है । नारी की विविध समस्याओं में विवाह की समस्या के अंतर्गत दहेज, उन्मुक्त प्रेम, प्रेम विवाह, आंतरजातीय विवाह, विधवा विवाह आदि समस्याओं का और नारी की अन्य समस्याओं में सौंदर्य, स्त्री-पुरुष संबंध, नारी अत्याचार, नारी पर सामाजिक बंधन आदि समस्याओं का विवेचन किया है । देश की महत्वपूर्ण समस्याओं में विभाजन, महँगाई की समस्या, देहातों की स्थिति, भूख, बलिदान की भावना का अभाव, भ्रष्ट नेता और राजनीति, सरकारी अफसर और ठेकेदारों के भ्रष्टाचार तथा युवकों की उदासीनता आदि समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया है । अतः आधिकारिक और प्रासंगिक कथानक से उसे संजोया है । कथावस्तु में आधिकारिक कथावस्तु को विकसित करने में प्रासंगिक कथावस्तु का उचित सहयोग मिला है । कथावस्तु में सुसंबध्दता, सरलता, मौलिकता, निर्माण कौशल, सत्यता, रोचकता, आकर्षकता तथा नाटकीयता का उचित निर्वाह करने की कोशिश की हैं । कथावस्तु का आधार मानव जीवन की समस्याओं का उद्घाटन करना है अतः मध्य-वर्गीय जीवन का, उनकी समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है ।

उपन्यास में पात्रों की बहुलता है । इसलिए कथानक में कहीं-कहीं विशृंखलता आयी हैं । फिर भी लेखक ने अपनी कुशलता से उसमें संघठन लाया है । सामाजिक समस्याओं को उठाने से मानव जीवन के विविध स्तरों का कुशलता से चित्रण किया हैं । इस तरह कथावस्तु साधारण होते हुए भी असाधारण तथा महत्वपूर्ण बनी हैं । लेखक ने उपन्यास में कथावस्तु इस तत्त्व का उचित निर्वाह कर कथावस्तु को सफल बनाया है ।

चरित्र चित्रण या पात्र :

"तट के बंधन" में पात्रों की बहुलता है । फिर भी विष्णुजी ने प्रधान और गौण पात्रों का चित्रण बडी सहजता से किया है । विष्णुजी का प्रधान उद्देश्य नारी जीवन की त्रासदी को स्पष्ट करना और नारी की विविध समस्याओं तथा देश की समस्याओं का विवेचन करना है । अतः पात्रों के चरित्र चित्रण में वे न्याय कर नहीं पाये । कुछ पात्रों का विस्तार से चित्रण हैं, तो कुछ का केवल नामनिर्देश मात्र हुआ है । सामाजिक उपन्यास होने से लेखक ने पात्रों के चरित्र से अधिक समस्याओं को महत्व दिया है । फिर भी प्रधान पात्रों का चरित्र चित्रण कुशलता से किया है । उन्होंने चरित्र चित्रण की प्रत्यक्ष या परोक्ष दोनों विधियों का सहारा लिया है । अनेक स्थलों पर लेखक ने स्वयं पात्रों की विशेषताओं तथा दुर्बलताओं का विश्लेषण कर नाटकीयता से परिस्थितियों तथा कथोपकथन से उनके चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला है । पात्रों के बाह्य संघर्ष के साथ-साथ आंतरिक संघर्ष का चित्रण कुशलता से सजीव बनाया है । पात्रों के चरित्र में परिस्थितियों के कारण जो उतार-चढाव आये हैं, जिसके कारण उन में उत्थान-पतन की स्थिति निर्माण हुई है उसका वास्तविक चित्रण किया है । लेखक ने रोजमर्रा जीवन के साधारण से साधारण, क्रिया-कलापों के बीच उन्होंने अपने पात्रों की स्वभावगत तथा अन्य विशेषताओं को स्पष्ट किया है ।

विष्णुजी ने समाज का व्यापक चित्रण करते समय प्रधान और गौण पात्रों का चयन किया है । किंतु गौण पात्रों की उद्भावना अपने जीवनादर्श और नैतिक विश्वासों के अनुरुप की है । अतः इन पात्रों के आचरण तथा क्रिया-कलापों में लेखक का चिंतन दिखाई देता है । किंतु वे समाज की नैतिक व्यवस्था और मर्यादाओं को पूर्णतः स्वीकार करने को तैयार नहीं है । इसलिए उन्होंने अपने पात्रों की उद्भावना के माध्यम से समाजव्यवस्था में सुधार और संशोधन प्रस्तुत किए हैं तथा उसके प्रति विद्रोह व्यक्त किया है । उपन्यास में लगभग 29 पुरुष और 13 नारी पात्र हैं। पात्रों की भरमार होने के कारण लेखक पात्रों को संपूर्ण न्याय दे नहीं सके । उन्होंने कुछ पात्रों का विस्तृत चित्रण किया है तो, कुछ पात्रों का संक्षेप में और कुछ का केवल नामनिर्देश किया है । फिर भी कथावस्तु तथा उद्देश्य को देखते हुए चरित्र चित्रण में विष्णुजी को अच्छी सफलता मिली है ।

कथोपकथन या संवाद :

विष्णुजी ने "तट के बंधन" उपन्यास में कथोपकथन का प्रयोग सफलता से किया है । प्रस्तुत उपन्यास में कथोपकथन का विकास तथा पात्रों के सूक्ष्म मनोभाव, संकल्प, विकल्प, विचार विमर्श, तर्क-वितर्क पर प्रकाश डालने में सक्षम हुए है । लेखक ने संवादों के माध्यम से अपने दृष्टिकोण को कुशलता से अभिव्यक्त किया है । कथोपकथन सजीव, रोचक, अर्थपूर्ण, पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल है । कथोपकथन से पात्रों की मनोवृत्तियों का परिचय सहजता से हुआ है । कथोपकथन से देशकाल का बोध भी बडी सहजता से किया है ।

उपन्यास में कहीं-कहीं लंबे संवादों का प्रयोग हुआ है, किंतु वे बोझील तथा हानिकारक नहीं हुए हैं । लेखक

ने लंबे संवादों का प्रयोग तर्क मिश्रित शैली का सहारा लेकर किसी समस्या का विरोध या विश्लेषण कर उसका समाधान खोजने के लिए किया है । इसलिए ऐसे स्थलों पर लंबे संवाद होने पर भी उपन्यास में वे बोझील तथा हानिकारक नहीं लगते हैं । विष्णुजी ने उपन्यास में कथोपकथन इस तत्वे का निर्वाह बहुत ही कुशलता से किया है । कथोपकथन की दृष्टि से उपन्यास सफल हुआ है ।

देश, काल वातावरण :

"तट के बंधन" में विष्णुजी ने कथानक की पृष्ठभूमि के अनुसार काल और घटना का संयोजन किया है । उपन्यास का कथानक वर्तमान स्थिति पर आधारित है । कथानक में नारी जीवन की त्रासदी, नारी की विविध समस्याएँ तथा देशकी समस्याओं को उठाया है । उसके अनुसार विष्णुजी ने काल और घटना का संयोजन कर उसमें विश्वसनीयता और प्रभाव निर्माण किया है । उन्होंने विभाजन के समय हिंदु और मुसलमानों में जो जातीय दंगे, तनाव, संघर्ष, अन्याय, अत्याचार हुए उसका यथार्थ चित्रण किया है ।

हिंदु धर्म में विवाह पध्दति और उसके कारण उत्पन्न होनेवाली समस्याएँ, मध्यवर्ग की कठिनाईयाँ, उनके रीति-रिवाज, परंपराएँ, आचार-विचार, आशा-आकांक्षाएँ, पारिवारिक जीवन तथा देश की भ्रष्ट राजनीति और नेता, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं का चित्रण परिस्थिति के अनुकूल किया है । देश, काल वातावरण से कथानक और पात्रों के चारित्रिक विकास में उचित योगदान मिला है । वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति का चित्रण यथार्थ किया है । देश, काल वातावरण की दृष्टि से "तट के बंधन" उपन्यास सफल हुआ है ।

भाषा शैली :

विष्णुजी ने "तट के बंधन" उपन्यास में सीधी, सरल और बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है । विष्णुजी का भाषा पर पूर्ण अधिकार होने से वह प्रवाहमयी, प्रभावी, सांकेतिक, भावात्मक, अलंकारिक, व्यंग्यात्मक तथा सीधी और सरल बनी हैं । लेखक ने कथनात्मक, आत्मकथनात्मक, विश्लेषणात्मक, पत्रात्मक, स्वप्न, मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग उपन्यास में किया है । विविध शैलियों के प्रयोग से उनकी भाषा सक्षम और बोधगम्य बनी है । भाषा को प्रभावी, प्रवाही, सशक्त तथा समृध्द बनाने के लिए उसमें देशी-विदेशी भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है । भाषा को रोचक तथा सुचारु रुप प्रदान करने के लिए कहावतें, मुहावरें, उक्तियाँ, सूक्तियाँ आदि का प्रयोग कुशलता से किया है । विष्णुजी की भाषा प्रसाद, ओजस्वी और माधुर्य आदि गुणों से परिपूर्ण है । उन्होंने सीधी, सरल, प्रभावी, प्रवाही, पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग कर उपन्यास का संयोजन बडी कुशलता से किया है । अतः उनकी भाषा सशक्त, प्रभावी और रोचक बनी है । भाषा शैली की दृष्टि से उपन्यास सफल हुआ है ।

<u>उद्‌देश्य</u>:

"तट के बंधन" सामाजिक उपन्यास है । विष्णुजी ने प्रस्तुत उपन्यास में समाज के सामाजिक प्रश्नों को उठाया है । उसमें प्रधानतः नारी जीवन की त्रासदी को स्पष्ट करने की कोशिश की है । उन्होंने नारी की विविध समस्याएँ और देश की समस्याओं को उठाया है । लेखक ने नारी की विविध समस्याओं को उठाकर स्पष्ट किया है कि, नारी सामाजिक बंधनों के तट में बँधी है । इसलिए उसकी प्रगति नहीं हुई है । उसे अनेक कष्ट सहने पडते हैं, उस पर निरंतर अत्याचार होते हैं । अतः नारी ने सामाजिक बंधनों को तोडना चाहिए । नारी जब तक अपने पथ का निर्माण स्वयं नहीं करेगी तब तक उसकी मुक्ति असंभव है । लेखक ने संसार की नारियों को आवाहन किया है कि सभी बंधनों को तोडकर प्रगति के पथ पर अग्रेसर हो, तभी समाज का सुधार हो सकेगा । लेखक ने शशि के अपने जीवन साथी का चुनाव स्वयं करने तथा जीवन का पथ स्वयं निर्माण करने के साहस का चित्रण कुशलता से किया है । उसका चित्रण नई पीढी के लिए प्रेरणादायी बना है ।

समाज में प्रचलित रुढियाँ, परंपराएँ तथा कुरीतियों को तोडने का साहस नयी पीढी ने किया है । शशि, नीलम और ललिता सामाजिक परंपराओं तथा कुरीतियों को तोडती हैं । शशि ने भाई और भाभी की पर्वाह किए बिना आंतरजातीय विवाह किया । नीलम परिस्थिति के अनुरुप अपने को बदलती हैं । उसके जीवन में अनेक प्रेमी आये । परिस्थिति के अनुसार वह प्रेमियों को बदलती रही और अंत में सुभाष से विवाह किया । ललिता ने पिता के विरोध की पर्वाह किए बिना सत्येंद्र के साथ प्रेम विवाह किया । इसप्रकार युवतियाँ साहस कर स्वयं अपने जीवनसाथी को चुनकर रजिस्टर विवाह करेगी तो दहेज और विवाह के खर्च का सवाल हल होगा । विष्णुजी स्पष्ट करना चाहते हैं कि नयी पीढी पुराने बंधनों को तोडकर नये विचारों को अपनाकर चलेगी तो अनेक सामाजिक समस्याएँ हल हो जाएगी । लेखक ने अपने ये विचार अनेक उदाहरण देकर स्पष्ट किये हैं ।

देश की राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं में महँगाई, भूख, देहातों की स्थिति, लोगों की देश के प्रति निष्ठा, आस्था और प्रेम, पढे-लिखे युवकों की उदासीनता, भ्रष्ट नेता और राजनीति, सरकारी अफसर और ठेकेदारों के भ्रष्टाचार आदि समस्याओं को बडी कुशलता से उजागर किया है । लेखक ने स्पष्ट किया है कि नई पीढी उदासीनता को छोडकर अपने ज्ञान और शक्ति का उपयोग देश के लिए करें । भ्रष्ट राजनीति और नेताओं के खिलाफ लोगों को जागृत कर उनमें परिवर्तन लाने की कोशिश की जाए तो इनमें परिवर्तन होगा । लेखक ने उपन्यास में पात्रों के माध्यम से दिखाया है कि, जो अपने को बदलकर संघर्ष कर साहस से आगे बढे हैं, वे जीवन में सफल हुए हैं । उन्होंने अपने साथ दूसरों को भी आगे बढने की प्रेरणा दी हैं ।

लेखक ने उपन्यास में नारी जीवन की त्रासदी को स्पष्ट करने की कोशिश की है । नारी की समस्याओं में विवाह की विविध समस्याएँ जैसे नारी सौंदर्य, स्त्री-पुरुष संबंध, नारी अत्याचार, नारी पर सामाजिक बंधन आदि

समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया है । देश की महत्वपूर्ण समस्याओं में विभाजन, महँगाई, देहातों की स्थिति, भूख, बलिदान की भावना, भ्रष्ट नेता और राजनीति, सरकारी अफसर और ठेकेदारों के भ्रष्टाचार, पढे-लिखे युवकों की उदासीनता आदि समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया है । लेखक ने उपर्युक्त समस्याओं का विवेचन कर उन्हें हल करने के सुझाव भी दिए हैं । नयी पीढी लेखक ने बताये हुए मार्ग पर चलेगी तो सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याएँ हल हो जाएगी । लेखक को उपन्यास में अपने उद्‌देश्य की पूर्ति करने में सफलता मिली हैं । उद्‌देश्य की दृष्टि से उपन्यास सफल हुआ है ।

"तट के बंधन" उपन्यास का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता कि विष्णुजी ने उपन्यास के तत्वों का उचित निर्वाह प्रस्तुत उपन्यास में किया है । उपन्यास के तत्वों की दृष्टि से "तट के बंधन" उपन्यास सफल हुआ है ।

********** xxxx ***********